By
Rahul Kumar Jha
Dept.of Political Science

Lecture-10

Topic- Liberalism

Class- B.A. Degree-III (Hons, P-VIII D)

Subject- Political Science

Date - 11 sept., 2020

By Rahul Kumar Jha.

उदारवाद :-

समकालीन उदारवाद :- मानव की स्वतंत्रता व गरिमा की रक्षा करना उदारवाद का प्रारंभ से ही ध्येय रहा है। उदारवाद का पुराना और नया दोनों रूप ही मानव के चयन और निर्णय के क्षेत्र में वृद्धि करके उनके व्यक्तित्व के विकास के प्रबल समर्थन में जुटे रहते हैं।

उदारवाद का समकालीन रूप भी परंपरागत उदारवाद की तरह ही निरंकुशवाद विरोधी है। उदारवाद का सारयुक्त लक्षण मानवतावाद है। यह कमजोर का समर्थक व दमनकारी का विरोधी है। समय के परिवर्तन की

जैसे कुछ उदारवादियों ने भी स्वतंत्रता के नए-नए सूत्र खोजने के प्रयास किए हैं। प्राचीन उदारवाद जहां राज्य व व्यक्ति की स्वतंत्रता के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण के लिए हुए था, वहीं समकालीन उदारवाद राज्य और व्यक्ति के बीच सामंजस्यपूर्ण संबंध स्थापित करके सकारात्मक दृष्टिकोण का परिचय देता है।

प्राचीन उदारवाद आर्थिक क्षेत्र में निजी उद्यम की स्वतंत्रता का पोषक रहा जबकि आधुनिक उदारवाद व्यक्ति व समाज के हितों के लिए आर्थिक क्षेत्र में भी राज्य के उचित हस्तक्षेप का पक्षधर है। इसका प्रमुख कारण बदली हुई सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियां मानी जाती हैं। उदारवादियों की नई पीढ़ी ने आर्थिक उदारवाद के परंपरागत सिद्धांत का खण्डन किया।

समाजवाद के आगमन ने आर्थिक उदारवाद के नए सिद्धांत को जन्म दिया और नए उदारवाद ने भी समाजवादी सिद्धांतों के प्रति अपनी आस्था प्रकट की है। उदारवाद को नए रूप में लाने का श्रेय बेंथम, मिल तथा ग्रीन जैसे विचारकों को जाता है। बेंथम व मिल का उपयोगितावाद का सिद्धांत ही 'अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम सुख' के भाव में आने वाली बाधाओं को हटाने के लिए व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर भी तर्क लगाता है।

आधुनिक उदारवाद का प्रमुख जोर इस बात पर है कि स्वतंत्रता केवल एक अभाव नहीं है। उपयुक्त रूप में कार्यरत संवैधानिक तंत्र के माध्यम से अधिक प्रभावी राजनीतिक क्षमता अर्जित करने देना चाहिए। आधुनिक उदारवाद चाहता है कि उपेक्षित वर्गों को नया जीवन देकर उनकी राजनीतिक उदासीनता दूर की जाए और सत्ता का विकेन्द्रीकरण किया जाए।